ब-21

"श्रीरामोविजयतेतराम्"

दो विभूतियां

लेखक

वेदान्त-भूषण पंडित रामकुमारदास "रामायणी"
मणि पर्वत, श्री अयोध्या जी

ॐ नमोभगवते श्रीमते रामानन्दाचार्य्याय

भाष्यकार स्वामी अनन्त श्रीहरि-दासाचार्य जी महाराज

——:०:——

आसीद्यो द्विजराज मौलि मुकुटो योगीन्द्र चूड़ामणिः ।
साक्षाच्छङ्कर तुल्ययोगनिभवैः प्रख्यात प्रज्ञापरः ॥
कोर्त्या चन्द्रकला सहस्रकिरणैस्तुल्यप्रतापो रविः ।
श्रीहरिदासाचार्य वर्य सततं श्रीरामचरणेरतः ॥१॥
निर्वैरः सर्वं भूतेषु दम्भलोभविवर्जितः ।
नित्यं रामरसानन्दी हरिदासः समे गतिः ॥२॥
नमः विद्वद्वरिष्ठाय हरिदासाय धीमते ।
कौशलं "कुमार" भक्ताय भाष्यकारायवै नमः ॥३॥
श्रीहरिदासाचार्यवर रामक्ति दृढ़करि गह्यो ।
अप्रतिभट विद्वान्-महा-महिमा गुणराशी ।
मथि श्रुति शास्त्र पुराण रामसिय तत्व प्रकाशी ॥
रामानन्दाचार्य तत्व विस्तारन हेतू ।
रचे अनेक सुग्रन्थ सुदृढ़ भवनिधिकरसेतू ॥
नाम मात्र हरिदास "हौं रामदास" निजमुखगह्यो ।
श्रीहरिदासाचार्य्य वर रामभक्ति दृढ़ करि गह्यो ॥

श्री भीमसेनी एकादशी के पावन प्रभात कालीन सुहावने समय में सदेह राक्षसों के विजय चिन्ह से भूषित अपनी विजय

फहराते हुये भगवान सूर्यदेव उदयाचल से पश्चिम की तरफ बड़े वेग वे चले जा रहे हैं, शायद अस्ताचल पर विश्राम करने के विचार से शीघ्रता में हैं, ऐसे समय एक अष्ट वर्षीय ब्राह्मण कुमार ने मकुई से निकलते ही घाट पर कुछ स्त्रियों को देखा जो कि नदी में उतरने के विचार से अपनी-अपनी कंकुची आदि उतार रही थीं कि सहसा मङ्गली नामक एक बारह-तेरह साल की लड़की को अर्ध नग्न (लड़की का अंचल कंचुकी उतारते समय दाँतों से छूट गया था।) देख कर, हाय बाप रे। कह कर गिरा और बेहोश हो गया। उन ग्रामीण स्त्रियों ने समझा कि पंडित जी के लड़के को शायद बीछी ने मार दिया या साँप काट लिया जो कि इस भीठे (नदी करारे) में अधिक रहा करते हैं। और आजकल गर्मियों में तो बरसात सुरू होते ही इनकी अधिकता हो जाती है। अतः सब स्त्रियाँ उस बालक को घेर कर पूछने लगीं कि बच्चा हरिहर दत्त क्या हुआ ? क्या हुआ ? परन्तु वह बालक कुछ देर तक तो वैसे पड़ा रहा थोड़ी देर बाद उठते ही कहा कि हाय मङ्गली दीदी इतने दुःख को सहन करत हुई कैसी जीती हैं। एक वृद्धा ने पूछा कि क्या बात है ? तो लड़के ने कहा कि अभी वैसाख में जब मेरी इस कानी अँगुली में एक छोटा सा पाका (फोड़ा) हो गया था तो हमको तीन चार दिन रोते ही बीता बड़ी भारी पीड़ा थी।

परन्तु अभी मैंने देखा कि मंगली दीदी की छाती पर (हाथ से बता कर) इतने बड़े-बड़े दो पाका (फोड़े) हुये हैं वह बेचारी कैसे पीड़ा सहन करती है। इतना सुनना था कि मंगली वेचारी तो लज्जा के मारे अलग बैठ कर अपने मुँह को दोनों ज़ानुओं के बीच छिपा कर मुसकराने लगी, कुछ नवयुवतियाँ हँसने लगीं, कुछ फुसफुसाहट करते हुए लड़के को बुरा भला कहने लगीं, कुछ प्रौढ़ा वृद्धाओं ने तो आसमान ही शिर पर उठा लिया, एक वृद्धा कहने लगी कि अरे दइया

हो ! ई हरिहरवा तो उप्पर से जेतनइ गोर चिट्ट है, भित्तर से वोतनइ करिआ मजिट्ठ अबहिन से अइसन बात।' एक ने कहा कि हंस के घर कौआ जनमब इहै कहावत है कि कहाँ न पं० रामनारायन अइसन वड़का पंडित अवर सुद्धा औ कहाँ ओनकइ लड़िकाई हरिहरबा जनमतइ से गाँव के बहिन बिटिया घुइरै लाग अरे ददा रे जना फुरइ कलियुग लागि गा। एक प्रौढ़ा (जो ग्रामीण-पाठशाला के अध्यापक की पत्नी थी) ने कहा हमारे घर में (अर्थात् अध्यापक जी से) तो रोज-रोज एकर बड़ी बड़ाई होत है कि हमारे पाठशाला भरेमा हरिहर सरीखे लायक लड़िका दूसर कौनो हइयै नाँय है। एकरी तरह एक महिना मा सारसुत (सारस्वत) अउ चारि महिना मा चनरिका (सिद्धान्त चन्द्रिका) कण्ठ कइके लगाइ डारेसि अउ अब मुकुतावली पढ़त है। हमार गोपाल तो जब सोरह बरिसक होइगा तब परु साल से मुकुतावली पढ़इ लाग तब नई हरिहरवा तो बड़इ नलायक निकरा, भला केउ एसउ कहथइ। सब स्त्रियाँ इसी तरह जिसके मन में जो आता था बकतीं झकतीं थीं, और बालक हरिहरदत्त रोता था, उसी समय मंगली की माता ने कहा बच्चा हरिहर ! वह मंगली के पाका (फोड़ा) नहीं है किन्तु जो उसके बच्चा पैदा होगा राम जी उसके पीने के लिये उसी में दूध रखैंगे। हरिहर ने पूछा बचा कब पैदा होगा काकी ? वृद्धा ने कहा बेटा क्या मालूम अभी तो मंगली का विवाह ही नहीं हुआ।

हरिहर—जब बच्चा पैदा होने का कोई समय निश्चित नहीं है तो अभी से दूध का प्रबन्ध क्यों हो रहा है।

वृद्धा—बेटा रामजी बड़े दयालु हैं वे सोचते हैं कि बच्चा जब पैदा होगा तो उसके दाँत तो रहैंगे नहीं खायेगा कैसे तो उसके लिये उसमें दूध भर देंगे।

हरिहर—अच्छा जब बच्चा बड़ा हो जाता है, दाँत हो जाते हैं तब तो रामजी उसे नहीं देते। उसके माता पिता देते हैं और स्वयं कमाने लगता है।

बृद्धा—नहीं बेटा तब भी रामजी ही देते हैं।

हरिहर—अच्छा काकी रामजी कहाँ रहते हैं और कौने कौने गाँव में भोजन भेजने का प्रबन्ध करते हैं।

बृद्धा—बेटा रामजी सब जगह सब को रोज-रोज भोजन देते हैं और दुनियाँ भर में रहते हैं।

हरिहर—क्या रामजी के घर नहीं है जो सब जगह घूमि घूमि रहते हैं ?

बृद्धा—रामजी ईश्वर हैं, भगवान हैं, भला उन्हीं के घर न होगा। रामजी वहीं रहते हैं जहाँ तुम्हारे बाबूजी हर पूर्णमासी को नहाने जाते हैं और आज जहाँ गये हैं।

हरिहर—हमारे बाबू जी तो अयोध्या जी गये हैं।

बृद्धा—हाँ हाँ वहीं वहीं (बृद्धा के पति का नाम पं० अयोध्या मिश्र था)

हरिहर—काकी ! क्या वहां जाने पर रामजी हमारे पढ़ाने के लिये एक बड़ा पंडित बुला देंगे और हमारे रहने, खाने, कपड़ा, पाथी आदि का प्रबन्ध कर देंगे ?

बृद्धा—हाँ रे सब कुछ का प्रबन्ध कर देंगे। लेकिन भला तो तू अभी से बड़ा पंडित क्यों खोजता है ?

हरिहर—पाठशाला में गुरू जी कहा करते हैं कि मुक्तावली के बाद हम तुम्हें न पढ़ायेंगे, काशी जी अथवा और कहीं अन्यत्र किसी बड़े पंडित के पास तुम्हें जाना पड़ेगा।

बृद्धा—तुम्हारे बाबू जी क्या बड़े पंडित नहीं हैं, दूसरी जगह क्यों

जाना पड़ेगा, उनके समान जवार में कोई पंडित भी है ?

हरिहर—बड़ा पंडित होने से क्या हुआ, उन्हें पढ़ाने की छुट्टी हा कहाँ ? वे तो हर दम जब देखो तब तुलसी कृत रामायण की पोथी खोले पत्रा हाथ में लिये हुये कुछ पढ़ते नहीं रोया करते हैं, जब अइया (दादी बहुत चिढ़ती है तब पोथी बैकुण्ठ करके खाने उठते हैं। इतना कह कर उस लड़के हरिहर ने उठकर अपनी धोती, लोटा और मुक्तावली पोथी लेकर वृद्धा का चरण स्पर्श किया और पालागन करके बोला कि काकी ! घर जाकर माई से कह देना कि हरिहर राम जी के घर पढ़ने गया है। इतने में हरिहर की माता भी स्नानार्थ वहीं आ गई और सब वृतान्त सुनकर तथा यह जान कर कि हरिहर अयोध्या जी जा रहा है प्रसन्न हुई और चरण स्पर्श करते हुए हरिहर को गोद में लेकर बड़ी प्रसन्नता से कहा—

बैटा जाओ भी अयोध्या जी में हमारे भी गुरू महराज जी तुमको बड़े प्यार से रक्खेंगे। तुम्हारे यज्ञोपवीत में अपने सुशिष्य पं० श्री हनुमान दास जी को लेकर पूरी संत मण्डली के साथ आये थे, कई वर्ष पूर्व ही से श्री महाराजजी ने अपने प्रधान शिष्य को स्थान का भार देकर उन्हीं को कोशिष्यादि करने का भार भी दे रक्खा है, अब वे छोटे महन्त कहलाते हैं। साधु सेवा का भार उन्हीं पर छोड़कर आये थे— बहुत आग्रह करने पर अपने छोटे शिष्य भी हनुमातदास जी से तुम्हें दीक्षा दिलवा दिया उसे आज दो वर्ष हो गया तब से श्री हनुमानदासजी के दर्शन नहीं हुये। अब को भी रामनौमी। पर जब हम गये थे तो तुम्हारी दादी ने भी हनुमानदासजी के सम्बन्ध में पूछा तो श्री महाराजजी ने बताया कि बड़े महाराजजी की जन्म भूमि संडीला गये हैं जेष्ठ अमावस्या तक आ जायेंगे, अतः अब आ गये होंगे। और यदि न भी आये होंगे तो भी श्री महाराजजी के चरणों में तुम्हें कोई

भी कष्ट न होगा, श्री महाराजजी तुम्हें स्वयं पढ़ायेंगे और यदि अवकाश न होगा तो पं० श्री उमापतिजी तुम्हेंपढ़ायेंगे, हमारे परिवार पर उनकी बड़ी कृपा रहती है वे तुम्हारे बाबा (पितामह) के सहपाठी हैं बड़े भारी विद्वान और महात्मा हैं। अभी पूर्णिमा के सवेरे तक तो तुम्हारे बाबूजी वहीं रहेंगे, पूर्णिमा स्नान करके लौटने को कह गये हैं। अतः यदि मार्ग में मिल जावेंगे या तब तक पहुँच जाओगे तो अच्छा है वे तुम्हारा प्रबन्ध करके तब आवेंगे। अच्छा थोड़ी देर और यहीं ठहरो मैं तुम्हारे रास्ते में खाने के लिये कुछ लिये आऊँ, तुम घर जावोगे तो तुम्हारी अइया तुम्हें न जाने देंगी। ऐसा कह माता जी ने घर जाकर थोड़ा सा सत्तू और कुछ पैसे लाकर हरिहरदत्त को को दिया तब हरिहरदत्त ने माता की पद धूलि शिर पर चढ़ा कर श्री अयोध्या जी के लिये प्रस्थान किया। घाट पर की स्त्रियाँ देखते ही रह गईं और बालक हरिहरदत्त अयोध्या के मार्ग पर जाते जाते आँखों से ओझल हो गया। हरिहरदत्त की माता यदि वहाँ न आ गई होतीं और स्वय बढ़ावा देकर न भेजती तो सम्भवतः वे स्त्रियाँ हरिहर के रोकने का प्रयत्न करतीं, परन्तु अब कुछ न कर सकीं, नहा धोकर अपने अपने घर गईं। पं० श्री रामनारायण की माता ने पौत्र का जाना सुनकर दों आदमियो को अयोध्या जी के रास्ते पर भेजा कि वे हरिहर-दत्त को पकड़ लायें। इधर गाँव के सब लोग यही कहते कि देखो पण्डिताइन की बुद्धि कैसी मारी गई है भला कोई अपने बेटे को इतनी थोड़ी सी बात पर निकाल देता है। स्त्रियों का पढ़ना इसीलिये बुरा होता है पण्डिताइन का स्वभाव पहिले ऐसा नहीं था, जब से रामनारायण पंडित ने इन्हें पढ़ा दिया तब से इन्हें भी जहाँ घर के कामों से छुट्टी मिली कि गीता रामायण महाभारत आदि कुछ न कुछ बाँच कर अपनी सासु कों सुनाया ही करती हैं, कभी बैठ कर माला ही जपने

लगती हैं और आज दुधमुँहे बच्चे को क्या-क्या सिखला कर कहाँ भेज दिया, इसी से तो कहा जाता है कि हम बीस विस्वा वाले कान्य कुब्जों में कण्ठी बाँधना और स्त्रियों का पढ़ना नहीं सहता। इसी तरह बक झक कर शान्त हो गये, परन्तु पं० रामनारायण की पत्नी प्रसन्न रहती हैं जैसे कोई नई बात ही नहीं हुई और पं० रामनारायण की माता का तो रोते-रोते मरणान्त मालूम पड़ने लगा, हरदम पुत्रवधू को डाँटा करती कि तू ने हमारे हरिहर को अकेले क्यों भेज दिया।

चार दिन के बाद जब पं० रामनारायण जी घर आये तो पत्नी को प्रसन्न और माता को रोते पाया, चरण स्पर्श करने पर माता ने सदैव की तरह गद्‌गद् हो कर आशीर्वाद दे कर और ढाढ़ै मार कर रोनें लगी पं० रामनारायण जी आँगन में चारपाई पर बेठ कर इस वैषम्पत्व पर अवाक् हो कर विचार करने लगे, पत्नी ने उनका झोरा, पोथी, सोंटा सब घर में यथा स्थान पर रख दिया, और लोटे में पानी लेकर पति देव का चरण धोने बैठी ही थीं कि इतने में गाँव के कई लोग आ गये, जिससे वे पति की ओर देख कर मुस्कराती हुई घर में चली गई। गाँव वालों से यथा योग्य पैलगी चिरंजू होने पर जब सब लोग यथा योग्य बैठ गये, तो गाँव वालों ने एकादशी के दिन की नदी वाली सारी घटना सुना कर हरिहर को ढूँढ़ने का आग्रह किया। तब पं० रामनारायण जी की समझ में घर की वैषम्पता का कारण आ गया। हाथ पाँव धोते-धोते उन्होंने गाँव वालों से कहा, मैं तो राजा ऋतुध्वज, दशरथ या उत्तान पाद सरीखे नहीं हुआ। परतु आप लोगों के आशीर्वाद से भगवान् ने कृपा करके मुझे ऐसी पत्नी दिया है जो मदालसा, सुमित्रा और सुमति तीनों के गुणो से परिपूर्ण कही जा सकती है अहा क्या अपूल्य पद भी गोस्वामी जी ने लिखा है—

पुत्र वती युवती जग सोई।
रघुबर भगत जासु सुत होई॥

नतरु बाँझ भलिवादि विश्रानी।
राम विमुख सुत तेहित हानी॥

आप लोगों के चिन्तित होने तथा किसी प्रकार के कष्ट करने का प्रयोजन नहीं हैं, मैं आ गया सब ठीक हो जायगा। तब गाँव वाले—लोग "जैसे उदई वैसे भानु॰ "जस मुकुन्द तस घर के लोगा" इत्यादि लोकोक्तियाँ बड़बड़ाते हुये अपने अपने घर चले गये।

सब के जाने पर माता ने रामनारायण से हरिहर के लाने को कहा तो राम नारायण ने कहा कि हरिहर कहीं चोरी करने तो नहीं गया है पढ़ने ही गया है ब्राह्मण के लड़के को और क्या चाहिये।

माता—नन्हा सा बच्चा परदेश में केसे रहेगा?

रामनारायण—मुझे तो आपने काशी भेजा था तब ती मैं हरिहर से भी एक साल छोटा ही था और बिना परदेश गये कही विद्या आती है। यह कर—"प्रथमत: पठनं कठिनं पुन रहो परदेश निवासनम्॰।" इत्यादि अस्पष्ट स्वर में गुनगुनाने लगे।

माता—काशी जी में तो तेरे पिता पढ़ाते थे वहाँ कौन बैठा है? ऐसे ही है, तो काशी जी में अपने पिता के पास ही भेज दें।

रामनारायण—वहाँ भी हमारे श्री गुरु महाराज जी हैं। माता जी मैं आपके चरणो की शपथ खा कर कहता हूँ कि हरिहर को वहाँ किसी प्रकार का कष्ट न होगा, जीवित रहोगी, तो दस वर्ष के बाद सुनोगी कि हरिहर के समान पण्डित भारतवर्ष भर में कोई नहीं है। अब की भी रामनौमी को जब हम लोग वहाँ गये थे तो एक दिन हरिहर को लेकर

पिता जी के सहपाठी अद्वितीय विद्वान् पं० श्री उमापति जी के दर्शनों को गया, तो हरिहर को देख पडित श्री उमापति जी ने कहा कि:—

इस लड़के से भी वैष्णवों का बड़ा ही आध्यात्मिक उपकार होगा, यह भी सम्प्रदाय में एक रत्न हो कर अपने समय का एक अद्वितीय विद्वान् और महान् ग्रन्थकार होगा। अतः माता जी आप धैर्य रक्खें हरिहर यहाँ से बढ़ कर वहाँ सुखी रहेगा। माता जी जानती थीं कि आज तक कभी किसी ने हँसी में भी उनके बेटे के मुख से झूठा शब्द नहीं सुना, अतः माता जी को पूर्ण संतोष हो गया।

२

बिना त्याग से भगवान् प्राप्ति नहीं हो सकती मालूम होता है इसी कारण समस्त विद्याधिपति भगवान् भुवन भास्कर अपने बाल सहचर एवं लाड़ले भाई अरुण की अरुणिमा को उदयाचल की गुफाओं में ढकेल कर और अपनी परमप्रिया कोमलांगी ऊषा को विलपती कलपती देख कर भी उसकी मोह ममता एवं सब प्रकार की संसारी मोह माया को अपनी ज्ञान मय प्रखर किरणों से भस्म करते हुये अपने आराध्य देव श्रीसीताराम जी के निर्विघ्न ध्यान करने के लिये बड़ी शीघ्रता से बड़ी दूर अस्ताचल की गुफा में पहुँचने के लिये रथ को बड़े वेग से दौड़ाये चले जा रहे हैं। ऐसे ही समय में कई दिनों का थका बालक हरिहर दत्त श्री अयोध्या जी पहुँच गया।

मार्ग भूल जाने पर भी जेष्ठी पूर्णिमा का मेला होने से ज्यादा भटकना नहीं पड़ा, परन्तु मार्ग में पिता से भेंट नहीं हुई कारण की पिताजी ऊषाकाल में ही श्री सरयू स्नान करके घर के लिये पयान कर चुके थे और हरिहर सवेरा होने पर सरयू स्नान करके मेला वालों के साथ जाकर श्री रघुनाथ प्रसादजी के श्री चरणों में लोट गया। श्री

महाराजजी ने पहिचान कर कहा कि अरे हरिहर बच्चा तू कब आया अभी दो घंटा पहिले ही पं० रामनारायण गये हैं। हरिहर ने कहा मैं एकादशी के दिन घर से चला था भूल कर राह बदल गई इससे बाबूजी से भेंट नहीं हुई। मेला वालों के साथ आया हूँ। माताजी ने यहाँ पढ़ने के लिये भेजा है। बालक की बातें सुनकर श्री महाराज जी ने पं० श्री हनुमानदासजी को (जो कई दिन पहले ही संडीला से आ गये थे) बुलाकर आज्ञा दिया कि इसे अपने पास ले जाकर पहिले कुछ भोजन कराओ और इसके रहने का प्रबन्ध भी अपने पास ही करना कल, परसो मेले की भीड़ से फुर्सत हो जाने पर इसके पढ़ने आदि पर विचार कियां जायगा। मेला वालो का कोई ठीक तो है नहीं कब जायें इसलिये एक साधु को अभी दोस्तपुर* भेज कर

---

*श्री अयोध्या जी से लगभग पैंतालीस ४५ मील दूर अग्नि कोण पर सुलतानपुर जिले में मझुई नदी के दक्षिण तट पर दोस्तपुर एक बड़ा सा कस्बा है उन दिनों दोस्तपुर एक मामूली ग्राम था आज भी कस्बे से सटा हुआ लक्ष्मी तथा सरस्वती दोनों से सम्पन्न ब्राह्मणों का एक पुरवा है। मझुई पर भी दर्शनीय पुल बना है जो आधा सुलतानपुर और आधा फैजाबाद के जिले में है। श्री हरिदासाचार्य जी की जीवन-सम्बन्धी अधिक बातें जानने की जिज्ञासा से मैं जब दोस्तपुर गया था तो सुना कि वहाँ से लगभग तीन मील पूर्व बोझवा नामक जंगल में श्री हरिदासाचार्य जी महाराज के शिष्य श्री मैथिली प्रपन्न जी भजन किया था। मैंने जाकर उनकी कुटिया का भग्नावशेष देखा। श्री मैथिली प्रपन्न जी की जन्म भूमि बोझवा बन से पश्चिम जलालपुर नामक ग्राम में थी घर का नाम पं० देवीदत्त था इसलिये उन्हें लोग बाबा देवीदास जी कहा करते थे। बोझवा बन छोटा होते

पं० रामनारायण के घर कहला दो कि हरिहर यहाँ आ गया है घब-रायेंगे नहीं।

श्री हनुमानदासजी ने तुरन्त आज्ञा पालन किया बालक हरिहर वहीं रह कर पढ़ने लगे। आषाढ़ के अन्तिम सप्ताह में पं० रामनारायण जी अपनी माता और पत्नी के सहित आये और हरिहर दत्त के पढ़ने की व्यवस्था देखकर पं० रामनारायण जी की माता को पूर्ण सन्तोष हो गया। आषाढ़ी पूर्णिमा का स्नान करके माता और पत्नी को साथ लेकर पं० रामनारायण घर चले गये। हरिहर दत्त पढ़ने लगे। इसी बीच में प्रयाग के पंडित सीताराम शर्मा अपने पुत्र शिवसहाय को लेकर आये और पं० श्री उमापति जी के पास ठहरे उन दिनों श्रीसदन बन रहा था। पूज्य पं० श्री उमापति जी के आग्रह से श्रीगुरु सदन बिहारी जी के प्रादुर्भाव (प्रतिष्ठा) तक श्री अवध में रह गये। हरिहर दत्त को पं० श्री उमापति जी ही पढ़ाते थे, पं० श्रीसीताराम जी के पुत्र श्री शिवसहाय* जी भी वहीं पढ़ने लगे, कई मास बाद श्रीगुरु सदन बिहारी जी के प्रादुर्भाव (प्राण प्रतिष्ठा) हो जाने पर पं० श्रीसीताराम जी तो प्रयाग चले गये परन्तु श्रीशिवसहाय

हुये भी भयावना है। वहाँ के लोगों का आज भी दृढ़ विश्वास है कि उस जंगल में जाने पर जै बाबा देवीदास की कह देने मात्र से वहाँ के सर्प बिच्छू विषखोपरे आदि विषधर जन्तु आदि नहीं इससे और वोझवा से समीप भैरो ताल के भयंकर भूत प्रेत भी नहीं सताते।

*यहीं पं० शिवसहाय जी कालान्तर में श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण पर शिरोमणि नामक पूर्वा पर समन्वय पूर्वक अपूर्व एवं प्रामाणिक टीका के रचयिता हुये। शिरोमणि सरीखे सर्वोत्तम टीका अभी तक और कोई नहीं हुई है।

जी को बड़े स्थान में श्रीजानकी प्रसाद जी के संरक्षकत्व में छोड़ गये। हरिहर और शिवसहाय दोनों विद्यार्थी समवयस्क तथा दोनों विद्या व्यासंगी एवं मेधावी थे। दोनों साथ-साथ ही पं० श्रीउमापति जी से पढ़ने लगे। पं० श्रीरामनारायण जी तो प्रत्येक पूर्णिमा को आते थे, कार्तिक चैत्रादि में कभी-कभी हरिहर की माता और दादी भी आतीं। दो वर्ष के बाद पं० श्रीसीताराम जी आये और अपने पुत्र शिव सहाय को श्री जानकी प्रसाद जी से दीक्षा दिलवा कर अपने घर प्रयाग लिवा गये और हरिहर दत्त यहीं रह कर पढ़ने लगे। जिस समय वैयाकरण भूषण पढ़ रहे थे उसी समय श्रीहनुमान दास श्री अपने बड़े शिष्य श्री मणिरामदास* जी को श्रीरघुनाथ प्रसाद जी महाराज को हजूरी

---

*एक दिन एक संत किसी स्थानीय कार्य से फ़ैज़ाबाद गये थे उनका पारस (भोजन) रखा था जिसे श्री मणिरामदास जी ने एक दिन भिक्षुक को खिला दिया। जिस पर श्रीरघुनाथ प्रसाद जी ने हँस कर कहा कि 'एक म्यान में दो तलवार का रहना असंभव है।' इस बात का मर्म समझ कर श्री मणिरामदास जी आज्ञा माँग कर श्रीचित्रकूट चले गये और वहाँ एक सहस्र १००० नवाह्निक पाठ श्री वाल्मीकीय रामायण का करने का निश्चय करके श्रीजानकी कुण्ड पर करने लगे। नित्य मंदाकिनी स्नान, एकलक्ष मंत्रराजजप श्रीवाल्मीकी रामायण का नवाह्निक पाठ और श्री रामगिरि (कामठ) की परिक्रमा-यही दैनिक नियम था। तेरह साल तक नियम अखण्ड रूप से चलता गया। चौदहवें साल के आरम्भ में एक दिन पारायण करते समय कुछ क्षण के लिये तंद्रा सी आ गई तंद्रा में किसी को कहते सुना कि "मणिराम-दास! तुम्हारी आयु अब केवल बारह महीने ही और अवशेष है, अब तुरन्त श्री अयोध्या जी चले जाओ।" तन्द्रा भंग होने पर ये बातें

में रह कर बड़े श्रीमहाराज की बैठक श्री चित्रकूट चले गये और वहाँ से लौटने पर पुनः संडीले चले गये। श्री रघुनाथ प्रसाद जी ने विद्यार्थी हरिहरदत्त को पढ़ने में तीक्ष्ण बुद्धि और रुचि विशेष देखकर अपने परम विद्वान एवं भावुक शिष्य महात्मा श्रीरामचरणदास जी (करुणासिंह जी) की संरक्षकता में रख दिया। श्री

गूँजती सी अवश्य रहीं पर इसका मर्म कुछ समझ में नहीं आया। दूसरे और तीसरे दिन भी वैसी ही दैवी आज्ञा हुई तो तीसरे दिन आपने कहा कि अभी तों मेरे पाठ में बारह मास के लिये ही श्री अयोध्या जी क्या करते जाऊँ ? तब तुरन्त ही स्पष्ट सुनाई दिया कि बारह वर्ष के लिये ही सही, अब तुरन्त जाकर अपना बारह साल का अवशेष पाठ वहीं पूरा करो।" आप तुरन्त चल पड़े कई दिनों में श्री अवध आ कर श्री सरयू तट वासुदेव घाट के पास रह कर अपना दैनिक जप एवं नवाह्निक करने लगे, मध्याह्नकाल में कुछ प्रेमियों को श्री वा० रा० का भावार्थ भी सुनाया करते। मध्याह्न काल संसारियों के विश्राम का होता हैं इसलिये जो खास प्रेमी होते वे ही मध्याह्न के सत्संग से लाभ लेने पहुँचेते। कुछ संत भी सदैव आप के पास रहने लगे और संत समागम दिनों दिन बढ़ता ही गया। एक दिन कहीं कुछ प्रेमी श्रीहनुमान जी के बीर निग्रह को वैलगाड़ी पर बिठाये अपने घर प्रतिष्ठा करने को ले जा रहे थे, जहाँ आप पाठ कर रहे थे वहाँ जाते ही गाड़ी टूट गई दूसरी लाई गई वह भी टूट गई तब एक बहुत मजबूत एवं नई गाड़ी लाई गई जब वह भी टूट गई तो लोगों को यह निश्चय हो गया श्रीहनुमानजी यहाँ से जाना नहीं चाहते हैं। तो उन प्रेमी ने आप से प्रार्थना किया कि मैं ग़रीब आदमी हूँ मेरा साठ रुपया खर्च हुआ है अतः मुझे साठ रुपया मिल जाय मैं जाकर अन्य विग्रह

करुणा सिंधु जी उन दिनों स्थान से हटकर श्रीजानकी पर स्वतंत्र रूप से एक स्थान बना कर भगवद्भागवत एवं साहित्य सेवा में संलग्न रहा करते थे। अपराह्न काल में बिशिष्ट अधिकारी उपासकों को श्रीसीतारामजी की उपासना की ऐकान्तिक भावना का रहस्य एव श्रीसीतारामजी का परत्व श्रुति स्मृतियों को मथ कर बताया करते थे, किशोरावस्था में पहुँचे हुये विद्यार्थी हरिहरदत्त भी उस दिव्य सत्संग का लाभ मनोयोग पूर्वक उठाया करते थे।

श्रीराम कोट बड़े स्थान में रहते हुये हरिहरदत्त ने अपने गुरुदेव श्रीहनुमानदास जी से कई वार विरक्त वेष (अँचला लंगोटी) देने की प्रार्थना की थी, परन्तु श्रीगुरुदेव ने हर बार यह कह कर टाल दिया करते कि तुम्हारे माता पिता जब मुझसे कहेंगे तब मैं तुम्हें

प्रतिष्ठित कर लूँ। आपने कहा मेरै पास साठ पैसे भी तो नहीं हैं। उस समय फैजाबाद के सेठ कन्नूमल जी वहाँ उपस्जित थे। उन्होंने तुरन्त सत्तर रुपये उसके सामने रख दिये। उसने कहा यदि मैं गरीब होता तो यह भी न लैता अतः मैं यह दश रुपया न दूँगा और साठ रुपया ही लेकर चला गया। उक्त सेठ जी ने बड़े समारोह से श्री हनुमान जी कीं वहीं प्रतिष्ठा करवा दो। आज भी मणि रामजी कीं छावनी में उन जाग्रत श्री हनुमान जी को नियमसेनित्य श्री महात्मी की रामायण का पाठ सुनाया जाता है। श्री मणिराम जी और उनके उक्त श्री। हनुमानजी के ज्ञान चरित्रों के लिये एक स्वतन्त्र लेख चाहिये। आज दिन श्री अयोध्या ही क्या समस्त भारत भर में अनाश्रित साधु वेष-धारियों को आश्रय देने में श्री मणिरामजी की छावनी के समान दूसरा कोई भी स्थान ही नहीं है, भविष्य की बात भविष्य निर्माता भगवान जानै।

विरक्त वेष दूँगा। गुरदेव ने केवल अँचला लगोंटी नहीं दिया था परन्तु अर्थ पंचक, रहस्य त्रय आदि का अलग अलग रहस्य तथा श्रीसीताराम जी के नाम, रूप, स्वरूप, लीला, गुण, विभूति—माधुर्यैश्वर्य आदि का तब अच्छी तरह समझा दिया था। जब गुरुदेव जी श्री चित्रकूट चले गये और श्रीरघुनाथ प्रसाद जी कीं कृपा से हरिहरदत्त को श्री करुणासिन्धु जी की सेवा और कृपा प्राप्त हुई थी, और अब सोलह सत्रह साल की अवस्था भी हो गई थी एक तो वैसे ही सुन्दर फिर अब 'समुपस्थित यौवनम्' का तो कहना ही क्या था। अनेक धनी एवं कुलीन ब्राह्मण अपनी कन्या का विवाह इन बाल पंडित के साथ करने के लिये पं० रामनारायणजी से और काशी जाकर उनके पिता पं० श्रीविष्णुदयालु जी से भी आग्रह करने लगे और मुँहमाँगी गठरी भी देने को तैयार हो गये थे परन्तु पं० रामनारायण जी कहते पिता जी जाने और उनके पिता पं० श्री विष्णुदयालु जी कहते कि जब हरिहर की व्याकरण और न्याय की पढ़ाई समाप्त हो जायगी और वह स्वतंत्र रूप से गृहस्थी चलाते योग्य हो जायेगा तब उसके विवाह की बात चीत करना उचित हो जायेगा तब उसके विवाह की बात चीत करना उचित होगा अतः दो एक साल आप लोग और शान्त रहे इत्यादि, परन्तु उन्हीं दिनों पं० श्री विष्णु दयालु जी को श्री गंगा लाभ हो गया। अब तो सब कोई पं० श्रीरामनारायण जी को ही और उनकी वृद्धा माता को घेरने लगे। अतः हरिहर दत्त जब जब घर जाते तभी आजी और माता का आग्रह विवाह करने का होता, परन्तु पढ़ाई समाप्त होने तक का बहाना करके तो हरिहर अपना पिण्ड छोड़ाते और पं० श्रीराम जी की अभिलाषा थी कि हरिहर बड़ा भारी पंडित होकर एक बार सर्वत्र दिग्विजय कर आवे तब उसका विवाह करूँ अता विवाह के विषय में हरिहर से कभी चरचा नहीं चलाते थे।

जिस समय हरिहर का सत्रहवां साल चल रहा था और व्याकरण महाभाष्य के अन्तिम खण्ड की पढ़ाई हो रही थी श्रीहनुमानदासजी चित्रकूट चले गये और हरिहर श्री जानकी घाट पर श्रीकरुणासिन्धु जी की सेवा में प्राप्त हुये। न्याय व्याकरण की पढ़ाई से समय निकाल कर श्रीकरुणासिन्धुजी से बड़े महाराज अर्थात् विन्दु श्री प्रवर्तक श्री १००८ श्रीस्वामी रामप्रसादाचार्यजी महाराज प्रसादित वेदान्त दर्शन पर श्रीजानकी कृपाभाष्य की विस्तृत व्याख्या भी सुना करते थे। कुछ दिनों के बाद घर से खबर आई कि दोस्तपुर में महामारी का बड़ा भारी प्रकोप हो रहा है जिसमें हरिहर की दादी का परलोक वास हो गया और माता की दशा भी शोचनीय ही है। श्रीकरुणासिन्धु जी की आज्ञा हरिहरदत्त जी माता को श्रीअयोध्याजी लिवाते घर गये और मुमूर्ष दशा में ही पालकी करके माता को श्रीअयोध्याजी लाये परन्तु स्थान में पहुँचते पहुँचते ही माता जी का साकेतवास हो गया। पं० श्रीरामनारायणजी तो अपनी माता जी की अन्त्येष्ठि से अनिवृत्ति होने के कारण साथ आये नहीं थे इसलिए हरिहर दत्त जी ने ही रामघाट पर माता जी का अग्नि संस्कार किया और घर गये। सूतक निवृत्ति के प्रथम से ही लोग पं० श्रीरामनारायण जी से आग्रह करने लगे कि अब तो घर में कोई स्त्री भी नहीं रह गई है अतः हरिहर के विवाह की स्वीकृति दे दीजिये और सूतक के बाद पहिली लग्न में ही विवाह भी कर डालिये। पं० श्रीहनुमान दास जी से हरिहर दत्त के मन का भाव अवज्ञात हो ही चुका था अतः लोगों से कहते कि भाई अब तो हरिहर आ ही गया है अबोध बच्चा भी नहीं है न्याय और व्याकरण का महान पंडित तो आपही लोग कहते हैं और कई बड़े बड़े वेदान्तियों से वाद विवाद करके उन्हें निरुत्तर करते आप लोगों ने कई बार देखा ही है, अतः हरिहर की स्वीकृति ले लेना

उचित है। दशगात्र के दिन जब सब कुटुम्ब सम्बन्धी तथा अन्य अनेक लोग एकत्र हुये उसी समय सभी ने जोर देकर हरिहरदत्त से विवाह की स्वीकृति का संकेत चाहा परन्तु हरिहर ने स्पष्ट कह दिया कि मैं किसी तरह वैवाहिक बंधन में न पड़ूंगा। केवल माता जी और अइया के संकोच से में आज तक स्पष्ट नहीं कह सकता था और पूज्य चरण श्रीबाबू जी से मुझे पूर्ण आशा है कि जब एक वार मुझे मूंत से पूत बनाया है तो अब पुनः मूंत बनने की आज्ञा न देंगे। यह कहकर ज़ोर ज़ोर से सस्वर—

है जगमूंत औ मूंतहिं को वन्यों
मूंत को भाजन मूंत में पाग्यो।
खेत में मूंत खंताम में मूंत
औमूतहिं मूत दशोदिशि जाग्यो॥
भाखैं निरंजन अमृत मूंत है
मूतहिं सोंसबही अनुराग्यो।
तात को मूंत औ मात को मूंत
सो नारि कोमूत लै चारन लाग्यो॥
"जनितो मनुजः द्विपदः प्रियता
सहित श्चतुरंघ्रिरभूत पशुवत्"

इत्यादि गाने लगे। फिर तो किसी की कुछ कहने की हिम्मत ही नहीं हुई सब उठ कर अपने अपने घर चले गये।

माता की अन्त्येष्टि क्रिया के बाद पं० श्रीरामनारायण जी और हरिहरदत्त जी दोनों पितापुत्र श्री अयोध्याजी चले आये। कुछ दिनों के बाद श्रीकरुणासिंधु जी ने पं० श्रीरामनारायण जी की सम्मति पाकर हरिहरदत्त जी को विरक्त वेष देकर श्रीहरिदास नाम से विभूषित किया और अपनी हजूरी में रखकर श्रीरामरहस्यग्रंथों का अनुशीलन कराया

और श्रीरामतापिन्युपनिषद तथा स्तोत्ररत्न श्रीरामस्तवराज पर विस्तृत एवं सरल भाषा लिखने की आज्ञा दिया। परन्तु उसी समय इस आज्ञा का पालन नहीं किया गया कारण कि श्रीहरिदास जी महाराज उन दिनों अपना अधिक समय श्रीकरुणासिन्धु जी की सेवा तथा उन्हीं की श्रीमुखामृत वाणी के आस्वादन में और आरंभ किये हुये अन्यग्रंथों के प्रणयन में लगा रहे थे। जिस समय आपकी आयु पचपन ५५ वर्ष की श्रीसम्बत् १८८० वि० में आपके एक कान में एक छोटा पर विषधर कीट कनखजूरा (गोजर) चला गया। संतों के विभिन्न उपचार से वह तो कान से निकल गया परन्तु आप की श्रवणेन्द्रिय सदैव के लिये सुप्त होगई। जिस कान में वह कीट नहीं घुसा था। वायें कान में भी जब कोई नलिका लगाकर ज़ोर से बोलता तो कुछ सुनते तब से आपका सत्संग में कुछ कहना-सुनना तथा शास्त्रार्थ करना आदि सर्वथा छूट गया। केवल श्रीकरुणासिन्धु जी के लिये मधुकरीमांग लाते तथा उन्हीं की सेवायें ही करते और जब श्री सं० १८८८ वि० में श्री करुणा सिन्धु जी महाराज सर्वाराध्य प्रियाप्रितम श्रीसीताराम जी की नित्य सेवा करने त्रिपाद्विभूतिस्थ दिव्य साकेत पधार गये तब तो आप सर्वथा अपनी एकान्त कोठरी में ग्रंथ रचना एवं अपने दैनिक नियम भजन में ही लगे रहते। आपके शिष्य श्रीमैथिली प्रपन्न जी आपकी सेवा में रहते। श्रीजानकी घाट स्थान से आपको सर्व प्रकार की सुगमता प्राप्त रहती थी। श्री सं० १९२६ वि० में आपके साकेत पधार जाने पर श्रीमैथिली प्रपन्न जी पूर्वोक्त वोझश्रा जङ्गल में किसी कारण वश चले गये और अन्त तक वहीं रहे।

(३)

आज से सौवर्ष पहिले के लोग प्रायः ऐसे का पुरुष नहीं होते थे कि उनकी आधी मूछें सर्दी पाकर दीमक चाट जायँ, उस समय के लोग

या तो खूब घनी मूछें रखते थे अथवा विरक्ताश्रम में रहने वाले कुछ संत शिर, मूंछ दाढ़ी आदि सम्पूर्ण पंच केशों को सर्वथा अलग कर देते थे। और उस समय के नवयुवक लोग विदेशियों के शासन में पड़कर भी ऐसे निर्वीर्य नहीं थे कि आँखोंपर चक्री-वृषभवत पाषाड़ का ढ़क्कन दिये फ़िरै। यह तो हमें नहीं पता कि स्वामी श्री हरिदासचार्य जी कभी लिफाफा और पेंसिल चाटते थे या नहीं और अँगुलीचाट चाट कर कागज़-पुस्तको का पन्ना उलटते थे या नहीं परन्तु इतना तो बड़े बूढ़ों से सुना है कि आपकी बड़ी बड़ी मूछें, नाभि तक लटकती हुई घनी श्वेत दाढ़ी अपूर्व छटा देती थी, और आँखों को कभी ढ़ोका नहीं दिया। दाँत तो अंतिम समय तक आपके ऐसे थे कि १०१ वर्ष की अवस्था में गन्ना चूसते थे। अतः दुनिया को धोखा देने के लिये कभी नकली दाँतों की कोई आवश्यकता ही न पड़ी। यद्यपि की आपके सब बाल श्वेत चाँदी वत् हो गये थे परन्तु ईश्वर को धोखा देने के लिये कभी खिजाब लगा कर मुँह काला नहीं किया। हाँ श्री हरिदासचार्य जी की शरीर में दो कमी अवश्य थी एक तो वधिर पने की जिसका कारण ऊपर कहा जा चुका है।

और दूसरी कमी अन्त में शारीरिक बल की आ गई थी परन्तु यह कमी तपश्चर्या के कारण थी, न कि ए० बी० सी० डी० आदि मगज चटटू पढ़ाई के कारण अर्थात् अपने छब्बीस अक्षरी मंत्र को जपते जपते जुरुटाग्नि में अपने स्वास्थ्य को स्वाहा नहीं कर दिया था, उस समय तो यह छब्बीस अक्षरी मंत्र कुलीन ब्रह्मणों के ग्रामीण घरों में पूर्ण रूपेण प्रविष्ट ही नहीं हुआ था।

आचार्य श्री हरिदासजी ने अपने अन्तिम समय तक श्री सम्प्रदाय के सत्साहित्य की वृद्धि करते रहें। आपने अनेकों ग्रंथ रत्नों का निर्माण किया है परन्तु अधिकांश ग्रंथ रत्न ऐसे बज्र मूर्खों के हाथ में

पड़ गये हैं कि विद्वानों को देखने तक नहीं को किन्तु कीड़े और दीमकों के खाजाने से बचे हुये अंश को चुपचाप श्री सरयू के प्रवाह में प्रवाहित कर देते हैं उस समय किसी कवि की यह उक्ति बारम्बार स्मरण आती है की—

चन्दन पड़ा चमार घर, नित उठि काटइ चाम।
चन्दन वपुरा का करइ, पड़ा नीच से काम॥

हाँ। ऐसी सम्प्रदायोन्नति विधायक साहित्य प्रवर्धक विद्वान आचार्य यदि इस हृदय हीन सम्प्रदाय में न होकर अन्य किसी सम्प्रदाय; जाति, या देशों में अवतिरत हुये होते तो घर घर उनकी प्रतिमा पूजी जाती, उनके रचित ग्रन्थों की ही स्वतंत्र परीक्षा कायम हो जाती। आज उस भग्नावशेष कोठरी का—जिसमें बैठ कर कि श्री हरिदासाचार्य जीने अनेकों ग्रन्थ रत्नों का निर्माण किया था उसका-सहस्त्रों वर्ष तक स्थित रहने वाला सुविशाल दर्शनीय स्मारक बन जाता। कितने शोक की वात है कि जिनके अधीन वह भग्न कोठरी है वे अपने विलास के लिये तो नित्य नये बँगले बनवाते-मरम्मत करवाते हैं, और उस कोठरी की तरफ दृग्पात भी नहीं करते। यदि यही हाल रहा तो दश, पाँच वर्ष में उस कोठरी का शायद नाम निशान भी न रहे। स्वामी श्री हरिदासाचार्य जी के शतशः ग्रन्थ आज भी है, परन्तु दुर्भाग्य वश मुझे सब देखने तथा नाम एवं विषय ज्ञात करने के लिये भी नहीं मिले। जो ग्रन्थ मुझे किसी तरह प्राप्त हो सके हैं उनका कुछ आद्यान्त निम्नोक्त है।

१—ईशावास्योपनिषद्भाष्यम्।

आदि मगला चरण—

येन व्याप्त मिदं सर्वमन्त र्वहिरशेषतः ।
तमीशं सच्चिदा नन्दं रामाख्यं प्रणमाम्य हम् ॥ १ ॥
यः प्रकाश यति वेदार्थ ममबुद्ध प्रकाशकः ।
तं राममात्म भावस्थं नमामि भक्त वत्सलः ॥ २ ॥
वेद वेदान्त तत्त्वज्ञः सर्व शास्त्र विशारदः ।
ससर्व निगमाचर्यो हनुमान मे गुरुर्मतः ॥ ३ ॥

अन्त- इति श्री कान्य कुब्ज द्विजोत्तम श्री रामप्रसाद शिष्य शिष्य शिष्येण श्री हरिदासाख्येन कृतमींशा वाष्योपनिषद् भाष्य समाप्तम् ॥

२—केनोपनिषद्भाष्यम् ।—

आदि-मंगलाचरण—

सर्वव्याप्यस्थितं तत्वं सर्वेन्द्रियप्रवर्तकम् ।
इन्द्रियागोचरं ज्योती रामाख्यं चिन्तयाम्पहम् ॥१॥
यस्य कृपा कटाक्षेण श्रुत्यर्थः भाति तत्वतः ।
तं सर्व निगमाचार्यं हनुमन्तं गुरुं भजे ॥२॥
पूर्वाचार्य्यान्नमस्कृत्य पदार्थस्याव भासकान् ।
कुर्वेंकेनोपनिषदो भाष्यं गूढ़ार्थ भासकम् ॥३॥

अन्त—इति श्री कान्य ....श्री हरिदासा ख्येन कृतं सामवेदीय नवलकार शाखोक्त केनोप निषद्भाष्यं समाप्तं शुभम् ।

३—छान्दोग्योपनिषद्भाष्यम् –

(मेरे पास छठें अध्याय मात्र का भाष्य है, पिछले पाँच अध्यायों का भाष्य कोशिश करने पर भी नहीं देख सका । जिनके पास है वे दिखाते नहीं । मालूम होता है स्वामी जी ने छान्दोग्य और वृह- दारण्यक—दोनों उपनिषदों के प्रत्येक अध्यायों का अलग अलग मंगलाचरण किया था । यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि आपने किन किन उपनिषदों पर भाष्य किया था । ईश, केन, छान्दोग्य

के छठे अध्याय और श्री रामतापिनी का ही भाष्य मैंने देखा है जिनमें श्री रामतापिनी भाष्य तो छप गया हैं।)

मंगलाचरण

श्रीरामं सकरुणादया कृपादि गुण सारम्।
सर्वं तं सर्व शक्तिं च नमामि पुरुषोत्तामम् ॥१॥
येन सेतुर्महान्यद्धो ह्यगाध जल सागरे।
सर्वं कर्तुं समर्थः यः सकरोतुमम वाँच्छितम् ॥२॥

अन्त—इति श्री कान्यकुब्ज द्विजोत्तमायोध्यावासी श्री रामप्रसाद शिष्य शिष्य शिष्येण हरिदासाख्येन छान्दोग्य षष्ठः प्रपाठक समाप्तम्। शुभमस्तु ॥

४—गीतातात्पर्य निर्णयः—

(यह ग्रन्थ श्री मद्भगवद्गीता के ऊपर विवेचनात्मक स्वतंत्र ग्रंथ है, इसमें गीता के पूर्वा पर का समन्वय करते हुये श्रुति स्मृतियों की एक वाक्यता दिखाई गई है। संस्कृत साहित्य में गीता के ऊपर यह ग्रन्थ अद्भुत अपूर्व एवं अमूल्य रत्न है।)

मंगलाचरण—

यः स्वान्तन्य भक्तानां सुलभोऽनन्त रूपवान्।
तं रामं सच्चिदानन्दं वन्देऽहं पुरुषोत्तमम् ॥

अन्त—इति श्री कान्य.....गीता तात्पर्य निर्णयः समाप्तः। शुभमस्तु श्री रामः। मिती मार्ग शीर्ष कृष्णाष्टमी श्री सम्बत् १८८३ वि० ॥

५—श्रीवैष्णवरहस्य भाष्यम्—

(इस ग्रन्थ में सिद्ध किया गया है कि विरक्त श्री वैष्णवों की ब्राह्मण क्षत्रिय आदि विभिन्न वर्णात्मक जाति मानना भारी पाप है, विरक्त श्री वैष्णवों की एक जाति अच्युत जाति है अतः विरक्त श्री

वैष्णवों की एक जाति है अतः विरक्त श्री वैष्णवों को परस्पर में खान-पान के सम्बन्ध में छूआ छूत का भूत लगाना घोर पाप है। इसे तर्क और श्रुति स्मृतियों के नाना प्रमाणों से सिद्ध किया है। अस्तु

आजकल अपने को श्री वैष्णव (श्री रामानन्दीय श्री वैष्णव) वाले कुछ दो चार कलमी लोग कहा करते हैं कि "श्रीराम मंत्र की परंपरा श्री जानकी-हनुमान-ब्रह्मा आदि से नहीं चली यह तो चालीस वर्ष से भी कमती समय से कुछ लोगों ने ईजाद की है।" उन श्री-सम्प्रदाय द्रोही कलमी लोगों का सवा सौ वर्ष पहिले का निर्मित श्री वैष्णव रहस्य भाष्यम्।" देखना चाहिये, स्वामी श्री हरिदासाचार्य्य जी ने भी 'श्री जानकीनाथ से आरंभ माना है। श्री मद्वालमीकीय रामायण पर अद्वितीय तिलक रामायण शिरोमणिकार पं० श्री शिव-सहाय जी ने भी लिखा है कि—

सीतानाथ समारम्भां श्री शुकाचार्य्य मध्यगाम्।
अस्मदा चार्य पर्यन्ताताम् वन्देगुरुं परम्पराम्॥

ऐसे ही इस ग्रन्थ के आरम्भ में भी है—

मंगलाचरण—

जानकींनाथ समारम्भां रामानान्दादि मध्पगाम्।
अस्मदाचार्य पर्यन्तां बन्देगुरु परम्पराम्॥१॥
श्रीरामप्रसादं संस्मत्य वैष्णव सेवा तत्परम्।
कुर्वेऽच्युतैकगोत्राणामच्युत जातिवर्णनम्॥२॥

अन्त—इति श्री श्री श्री कान्यकुब्ज द्विजोत्तम कुलोद्भूत भगवद्भागवतसेवन तत्पर दीनबन्धु श्रीराम प्रसादशिष्यानु शिष्यस्य श्री हनुमद्दासस्य शिष्येण श्री रामचरणानुयायिना श्री हरिदासाख्येन कृतं श्रौतं स्मार्तं च श्री वैष्णव रहस्य भाष्याख्य ग्रन्थं समाप्तम् शुभमस्तु। श्री सम्बत् १८७० वि०॥

६—नित्यकृत्यबोधक प्रबन्धः—

आरम्भ—

श्रीमते रामानन्दाय नम. ॥

नमः श्रीमारुत नन्दनाय ॥

श्रीसीतारामाभ्यान्नामः ॥

रामदासंहनूमन्तं नत्वाऽऽचार्य शिरोमणिम् ।

वक्ष्ये श्रीजानकीराम भक्तानां कार्यमुत्तमम् ॥

अन्त—इति श्री रामप्रसादानुयायिना श्री हनुमद्दास शिष्येण श्री हरिदासाख्येन कृतं नित्यकृत्य वोधकं प्रवन्धः ॥

७—रहस्यत्रयभाष्यम्—

(यह ग्रन्थ प्रकाशित है इसके कवर पृष्ठ पर छपा है—

त्र्प्यन्त गुरवेभगबते भाष्य काराय नमः ॥

वेदान्तवेद्याय परस्मै पुंसे श्रीजानकी नाथाय नमः ॥

रहस्यत्रयभाष्यम्

निखिल तंत्र स्वतंत्र प्रतिवादि भीकर श्री रामानन्दीयान्वय ।

श्री रामप्रसद वंशोद्भव योगिवर्य मणिराम वन्धुभिः ।

प्रकाण्ड विद्वद्भिः श्रीहरिदासाचार्य्य वर्य्यैः सम्पादितन् ।

मंगलाचरण—

श्रीरामाख्यं परंब्रह्म नत्वा श्री जानकीधवम् ।

कुर्वे श्रीराममंत्रस्य व्याख्यानं श्रौतमुत्तमम् ॥

अन्त—इति श्री मदग्रस्वामि परम्पराश्रितेन श्रीमद्रामप्रसाद वंशोद्भवेन श्री हरिदासेन सम्पादितं रहस्य त्रयभाष्यं समाप्तम् ॥

(यह ग्रन्थ भी प्रकाशित है, इसके २३ वें श्लोक के भाष्य में श्री रामचरितमानसकार गोस्वामी श्री तुलसींदास जी को अत्यन्त पूज्य भाव से आदर पूर्वक स्मरण किया है । यथा—

......असमद्गुरुभिः श्री तुलसिदासैः केकीकण्ठाभनीलामित्युक्तम्ः तेनमेघवत् स्निग्धमिन्द्र नीलमणि चिक्कणमभेद्यांच नीलम्। अतसी पुष्पवत् कोमलमरुण श्वेत गर्भ नीलम्। केकीकण्ठाभवदरुणता गर्भं नीलं च ॥ इत्यादि

मंगलाचरण तथा भूमिका—(संक्षिप्त)

रामं स्वादिगुरुं नत्वा परं ब्रह्म सनातनम्।
द्विभुजं जानकी नाथं सच्चिदा नन्द विग्रहम् ॥
शिष्यों हनुमान दासस्य ह्यनुगामी हनूमतः।
दासो ऽ हं राम चन्द्रस्य हरिदासेति नामकः ॥
येनैषा में सुधिर्दत्ता वेद सारार्थ वोधिका।
वेद वेद्यः स्वादिगुरुः सशमः शरणं मम ॥
....

नारद व्यास सूता दीन परतत्व प्रकाश कान्।
पृच्छकान् धर्म पुत्रादीन्प्रणमामि पुनः पुनः ॥
व्यास वाक्यामनाहत्य राम तत्वं परात्परम्।
मन्यन्ते यो नदुर्बुद्धिर्नास्तिकः को ऽ परस्ततः ॥
तारकादपरं मत्रं गर्भं जन्मादितारकम्।
मन्यन्ते योऽपदार्थज्ञः गतानुगति को सहिं ॥
सहस्त्रनाम तातुल्यं राम नाम परात्परम्।
हित्वा भजति नामान्यः वालिशः कोऽपरस्ततः ॥

अन्त—इति श्री कान्य कुब्ज कुलावतंस श्री रामानन्दीय वैष्णव वर श्री जानकी वल्लभ कृपापात्र श्री रामप्रसाद शिष्य शिष्य श्री हनुमद्दासस्य शिष्येण श्री हरिदासाख्येन श्रीरामचरणाज्ञयाकृतं सर्व वेद सार भूतं श्रीराम स्तवराज गुंह्यार्थ प्रकाश काख्य भाष्यं समाप्तम्। शुभं भूयाच्छ्री जानकी रामानन्य गति का नाम ॥

एकोन विंशति शता द्रु द्राधि के संवत्सरे।
ऊर्ज सित त्रयो दश्यां तस्मिन्नेव तुवासरे।
हरि दासेने कृत मिदं भाष्य तत्व प्रदीप कम् ॥

६ श्री रामतापिन्युपनिष्द्भाष्यम्—

यह भी प्रकाशित है। श्री रामपरत्व का इतना सरल एवं परम प्रौढ़ ग्रन्थ अभी तक संस्कृत या हिन्दी किसी भाषा में भी कोई बना ही नहीं भविष्य की भगवान जाने। इसमें पूर्वार्द्ध और उत्तरार्ध नामक दो भेद हैं। मंत्र संख्या के हिसाब से उत्तरार्द्ध अधिक है। परन्तु भाष्य पूर्वार्द्ध पर ही अधिक विस्तृत है। जैसे जो कलमी लोग, = सीतानाथ समा रम्भां" वाली परम्परा को तीस-चालीस वर्ष के भीतर हो जो श्री सम्प्रदाय में जो अपूर्व जागृति हुई है— उसी का परिणाम बतलाते हैं, उन्हें सौ वर्ष से भी प्रथम के लिखे आचार्य श्रीहरिदासजी के वृहद्ग्रन्थ श्रीवैष्णव रहस्य भाष्यम्" में भी "जानकी नाथ समारम्भां" आदि मिलने से कोई भी थोड़ी सी भी समझ रखने वाला व्यक्ति "सीतानाथ समारम्भां" वाली परम्परा को नई नहीं कह सकता वैसे श्री रामतापिनी भाष्य देखने से यह मालूम होता है कि सैकड़ों वर्ष पूर्व भी श्रीसम्प्रदाय में ही जागृति और दृढ़ता थी जैसी कि आज है उस समय भी उनको मुँह तोड़ उत्तर दिया जाता था जो यह कहते थे कि "एक मात्र अष्टाक्षर ही मुक्ति प्रदाता है अन्य नहीं" और ऐसा कहने वालों को उस समय भी वैष्णव चतुः सम्प्रदाय में उनकी गणना न करके उन्हें अर्वाचीन ही कहा जाता था। जैसा कि श्रीरामतापिन्युप निषत्पूर्वार्द्ध प्रारम्भ से मंत्र २३ अथवा तुरीयोपनिषत्के ५ पाँचवे मंत्र के भाष्य में स्वामी श्रीहरिदासाचार्य जी महाराज लिखते हैं— "योऽर्वाचीनो मन्त्रान्तरोपासकः न सर्वेऽपि भगवन्मंत्रा मुक्ति प्रदाः किन्त्वेक अष्टाक्षर एवेत्युक्तवान तन्मतं सर्वथा निरादरणीयम्।

यतः उपनिषत्सु तदुपास्यमंत्रार्था श्रुत्यातदुय बृंहणी भूत पुराणादिषु तं दर्थ वर्णना नुपपत्या तन्मंत्र स्यापि स्वरूपा दि ज्ञानाजनकत्वेन मोक्षदा तृत्वानुपयत्तेः।" वयंनु प्रथम पक्षोक्त रीत्या सर्वेऽपि भगवन्मंत्राः षड़क्षवत्-स्वरूपादि ज्ञान द्वारा मुक्ति प्रदाः वेद पुराणादिषु सर्वेषां मुक्ति हेतुत्व श्रवणादित्यवोचः ॥ पूर्वार्द्ध पृ० २६२

अर्थात-जो अर्वाचीन (नवीन मार्गानुयायी) मंत्रांक्षर के उपासक हैं। और यह कह रहे हैं कि सभी भगवन्मंत्र मुक्ति प्रद नहीं हैं किन्तु एक मात्र अष्टाक्षर ही मुक्ति प्रद है।" उनका यह मत सर्वथा निरादरणीय है क्यों कि उपनिषदों में तदुपस्य मंत्र श्रुति से तदुपबृंहणीभूत—पुराणादिकों में तदर्थ वर्णन नहीं है। अत एव उनका मंत्र (अष्टक्षर) भी स्वरूपादि ज्ञान जनक नहीं, अतः मोक्ष प्रदाताभी नहीं है।

(ऐसा अकाट्य तर्क अष्टाक्षर के लिये भी हो सकता है) और हमारे (श्री सम्प्रदाय के) सिद्धान्त में प्रथमोक्त रीति से सभी भगवन्मंत्र ही (श्री सम्प्रदाय के इष्टमंत्र) षटक्षर के समान स्वं स्वरूपज्ञान प्रकाशनद्वारा मुक्तिप्रद हैं, और वेद पुराणादिकों में समस्त भगवन्मंत्रमुक्ति के हेतु सुने जाते हैं।

आपके सभी बड़े बड़े ग्रंथों में प्रमाणों एवं युक्तियों की पुनरुक्तिवारं वार हुई है साहित्यिक विद्वान इसे पुनरुक्ति दोष मानते हैं, उस दोष के निराकरण के लिये आप श्रीरामतापिनी भाष्य के आरंभ में ही कह देते हैं कि—

सूक्ष्म तत्वविचारे हि पुनरुक्ति नें दोषभाक्।
मण्पादीनां परीक्षादौ यतो दृष्टिगुणा वह्ना ॥
अतः पुनः पुन र्ह्यत्र रामस्य श्रुति सम्मतम्।
निदानत्वं प्रकायामि वाक्येस्तै स्तैदसयुक्तिकैः ॥

आपका गुरु प्रदत्त नाम 'श्री हरिदास जी' था। 'हरि' यद्यपि कि भगवान के सभीरूपों का द्योतक है सर्वभगवद्विग्रहों के लिये हरि शब्दका व्यवहार होता है परन्तु प्रसिद्ध चौबीस अवतारों में एक अवतार का नाम भी 'हरि' है! इससे अपने श्रीरामस्तवराज भाष्य और तापिनी भाष्य दोनों जगहों में लिखा है कि यद्यपि समस्त भगवद्विग्रह श्री राम चन्द्रजी के ही रूप है परन्तु मैं परात्पर द्विभुजधनुर्धर रुप श्री राम जी का ही दास हूँ अन्य का नहीं ❀ यथा—

"दासोऽहं रामचन्द्रस्य हरिदासेति नामकः।"

(रा० स्त० भा०)

"वस्तुतो रामदासोऽस्मि हरिदासेति संज्ञकः।"

(रा० ता० भा०)

आपने मंत्र मत्रार्थ एवं अर्थ पंचक आदि सम्पूर्ण साम्प्रदायिक रहस्यों का ज्ञान अपने गुरु देव श्रीहनुमान दासजी से हो प्रप्त किया था फिरभीं अपने सिद्धगुरु रूपमें श्री करुणासिंधुजी के ही चरणो का सहारा लिया था। इसे आप स्वयं कहते हैं—

सार्थ तारकोपदेशे नार्थ पंचक बोधकम्।
भजे श्री रामरुपेण हनुमन्त गुरुं सदा॥

....

श्री राम प्रसाद नुग्मे हनुमान्मे गुरुर्मतः॥
रामस्वाँव तारीति ज्ञातं यतकृपया मया।
सद्गुरो स्तस्य श्री राम चरण स्पाज्ञयामुदा॥ इत्यादि

❀अनन्य श्री रामोपासक श्री मैथिलीशरणजी भी ऐसा ही कहते हैं—

धनुवर्ण या वेण लो श्याम रूप के संग।
मुझपै चढ़ने से रहा राम दूसरो रंग॥

श्री रामतापिन्युप निषद्भाष्यय मंगला चरण—

श्री मते रामानन्दाय नमः । श्रीजनकी वल्लभो जयति ॥
रामंसर्व गुणो पेतं ज्ञे यं गम्यं गतिं गुरुम् ।
द्विभुजं धनुषों पेतं जानकी रसिकं भजे ॥
यस्य जापं बिना रामः कदापि न प्रसीदति ।
भजेता राध्य धिष्ठानंतममाश्रयणं मनुम् ॥
समस्त निगमा चार्य रामानन्द जनप्रियम् ।
स्वपूज्य नाथं ज्ञानाब्धिं हनुमन्तं गुरुं भजे ॥
समस्त श्रुतिगुह्यर्थो ऽ द्यप्यनुक्तो बुधान्तरैः ।
श्री हनुमत्त प्रसादत्सम येदानीं प्रकाशयते ॥

पूर्वार्द्ध की समाप्ति —इति श्रीजानकी सहित श्रीरामोपदिष्ट निखिल वेद रहस्यस्य सकल मंत्रागमाचार्यत्व स्मृतेस्तत्सप्रदाय प्रवर्तकस्यतदेक निष्ठत्वेन तदत्यन्त प्रियस्य श्रीमद्धनुमतो दासत्वेनाख्यातस्य तदनुययिनश्च श्रीहनुमानदासस्य शिष्येण तत्कृपादृष्टयावलोकितेन श्रीहरिदासाख्येन श्रीमद्रामचरणानुयायिनाकृते श्रीहनुमत्प्रसाद ज्ञान श्रीरामस्वरूपनामादि तत्व प्रकाशके श्रीरामतापिनीयोपनिषद्भाष्ये पूर्वतापिनीय भाष्यं समाप्तम् । शुभमस्तु । श्रीसीतारामार्पणमस्तु ॥

उत्तरार्धभाष्य में संकल्प चरण नहीं है । समाप्ति में यह है—

इति श्रीमद्गुरु चरण सरोजभृंगेनश्रीहरिदासेन कृत श्रीरामोत्तर तापिनीयभाष्यं समाप्तम् । शुभमस्तु ।

१०—श्रीरामकृष्णैकः विचारः । ११—श्रीरामतत्वनिरूपणम् ॥ ये दोनो ग्रन्थ "तत्वसुधार्णवः" नामक विस्तृत ग्रंथ के दो बृहत्संदर्भ मात्र हैं इसी से इनके मङ्गलाचरण और समाप्ति में कोई विशेषता नहीं है । "तत्व सुधार्णवः" मुझे देखने को नहीं मिल सका अतः यह न जान सका कि वह कितना बड़ा अर्णव (समुद्र) है । उपरोक्त ग्रंथों में गीता तात्प-

र्यार्थ निर्णयः" को छोड़ कर शेष दशग्रंथ मेरे पास हैं। जिनमें नं० ७-८ और ६ वाले तीन ग्रंथ छपे हुये शेष लिखे हुये हैं॥

१२—दश नाम पराधभाष्य। और—१३ श्रीमदग्रदेवाचार्य जी कृत १२ प्रयत्ति रहस्य भाष्य और १३ दशनामापराध भाष्य मुझे बहुत थोड़ी देर के लिये देखने को मिले थे इससे न तो साद्यान्त देख सका और न मङ्गलाचरण और समाप्ति नहीं उतार सका। आपके ग्रन्थों के मङ्गलाचरण एवं समाप्ति के वाक्य भी सुन्दर साम्प्रदायिक तत्व निहित हैं इसी से मैंने उन्हें यहाँ लिख दिया है। उन रहस्यों का विवेचन एक स्वतंत्र निबंध में हो सकता है अतः लेख विस्तार भय से यहाँ नहीं लिखा जा रहा है।

१४—"आर्षतत्व प्रकाश" या इसी तरह का और कोई नाम वाला एक बहुत बड़ा ग्रन्थ श्रीमद्वाल्मीकी रामायण के ऊपर श्रीहरिदासाचार्य जी ने लिखा है जो सुन्दर एवं विस्तृत रूप से विवेचनात्मक है। ऐसा मैंने दार्शनिक सार्व भौम स्वामी श्री वासुदेवाचार्य जी से सुना है आपने इस ग्रन्थ की दो प्रतियाँ बड़ी जगह में देखा था जिसमें की एक प्रति तो बहुत दूर पश्चिम भारत में एक स्थान में था एक प्रति बड़े स्थान से चोरी हो गई। एक प्रति शायद एक स्थान में श्री अवध में ही है परन्तु मैं अभी उसे खोज नहीं सका।

मेंरे देखे हुये श्री हरि दासाचार्य जी ग्रन्थों में श्री वैष्णवरहस्यभाष्य में १८७० वि० गीता तात्पर्यनिर्णय में १८८३ वि० और श्री रामस्तवराजभाष्य में १६११ वि० की निर्माण सम्मत दिया है अन्य में नहीं॥

प्रयत्ति रहस्य भाष्यम। और गीता तात्पर्य निर्णयः ये दो ग्रन्थ मुझे श्री मणिराम जी की छावनी के तपोमूर्ति श्रद्धेय महन्त श्री रामशोभादास जी महाराज की कृपा से देखने को मिला था। और "दश

नामापराधभाष्य" की मैंने जानकी घाट श्री पण्डित जी महाराज के स्थान में देखा था।

अन्वेषण करते समय आप के नौ सवैया हिन्दी के भी मिले थे सम्भव है और कवितायें भी हिन्दी की हों। उन सवैयों के देखने से ज्ञात होता है कि आपकी हिन्दी कवितायें भी बड़ी सरस होती थी। सवैया बहार नामक एक छोटी सी पुस्तिका में वे संग्रहीता भी हैं भार्गव पुस्तिकालय काशी से प्रकाशित है। उन सरस सबैयों को यहाँ देकर हम श्री हरिदासाचाय जी महाराज के चरणों में बारम्बार कोटिशः साष्टांग दण्डवत् करते हुये विराम करते हैं—

सवैये

श्री हरि दासाचार्य जी महाराज कृत्।

जागत रामहिं सोवत रामहिं बोलत रामहिं बानी परी है।
स्वाँस उसाँस यथा जलपीवत, रैन दिना यह टेक धरी है॥
ऊठत बैठत गान करै पुनि, जेंवतहू विसरे न घरी है।
यों "हरिदास" कहैं रसना-रस रामहिं रामहिं रामभरी है॥१॥

रे मन मूढ़ वृथा भटके नव मास कहो सुधि कौन लई है।
जन्मभयो तेहि पीछे कहूँ, पहिले ही करी जिनछीर मई है॥
सो करुणानिधि भूलि गयौ अब नाहक तो जिय सोचभई है।
कहें वृथा भटके चहुँओर सुदेहै वही जिन देह दई है॥२॥

प्रीति लगी पुरुषोत्तम सों तव भूलिगयो वकिवो अरुहाँसी।
रामहिं राम रमो रघुनन्दन डारि दई मनों प्रेम की फाँसी॥
आठहुँयाम जपै हिय रामहिं आठहुँयाम रहै हरि आशी।
"योंहरिदास" कहैसुखसागरआनन्दकन्दमिल्योअविनाशी॥३॥

पेटहिं के लिये पाँब पलोटत पेटहिं के लिये खोजन लाजा।
पेटहिं के लिये नाचत कूदत पेट के काज बजावत बाजा॥
पेटहिं के लिये शीश नवावत, सूमसों बोल गरीबनिवाजा।
यों "हरिदास" संतोषभयेतब जैसेहि रंकअरु वैसेहिराजा॥४॥

नैन वही जो लखे 'हरिदासन' बैन वही हरि नाम उचारै।
कान वही जो सुनै प्रभुकै गुण, दान वही भवपार उतारै॥
नाम वही जग छाय रहै सर नाम वही प्रभु में तन गोरे।
ध्यानवहीजो लगे सियराम में ज्ञानवही सियराम विचारै॥५॥

कैदिन जात है पुत्र खेलावत कैदिन जात है बात बनाये।
कैदिन जात है खातऔ सोवत कैदिन जात है क्रोधबढ़ाये॥
कैदिनजात है काम अनीति में कैदिनजात है द्रोह पराये।
यों"हरिदास" कहैं नर देह सों रत्न मिले पर देत गमाये॥६॥

कोईरहो रुचिमाँग तम्बाकूमें कोईरहो रुचिबास सुगन्धन।
कोईरहो रुचिवाक बिलासमें कोईरहो रुचिमान सुकन्धन॥
कोईरहोरुचिकामिनिअन्धमें कोईरहो रुचिख्यालके बन्धन।
श्रीहरिदास, हरी जो विसारिके लागि रहेवरगोरखधन्धन्॥७॥

लाभ सोई हरिनाम जपै अरु हानि सोई हरिनाम भुलावै।
स्वर्ग सोई हरि सीखगई अरु नर्क वही हरि भक्ति न पावै॥
सिद्धि सोई हरिध्यान धरै,अरु बुद्धिसोई हरितत्व मझावै।
हरिदास सोई हरिके गुण गावतहारसोईहरिध्यानन पावै॥८॥

लाजत है हरिके गुण गावत तेसेहि काज सभी विगरैगो।
लोग कुटुम्बको प्रीति समानलौं आगे नही डगएक धरेगो॥
कौन बँटावत है दुख को 'हरिदास' जबै जम देखि डरैगो।
राम भजो न सबै तजि मूरख लाजहि लाज में नर्क परैगो॥९॥

श्रीहरिदासाचार्य की गुरु परम्परा

१ उभयविभूतिनायक परात्पर परब्रह्म श्रीराम जी महाराज ।

२ उभयविभूत्यधीश्वरीचिदानन्दात्मिका आह्लादिनी शक्ति महारानी श्रीसीताजी ।

३ भक्तिरसाचार्य श्रीहनुमानजी महाराज ।

४ जगत्पितामह चतुरानन श्रीब्रह्मजी महाराज ॥

५ महातेजा महर्षि श्रीवशिष्ठजी महाराज ।

६ विष्णु पुराण एवं कलिधर्मविधायक पाराशरस्मृतिकार भगवान् श्रीपराशर जी महाराज ।

७ ब्रह्मसूत्र एवं पुराणेतिहास स्मृतिकार भगवदवतार भगवान् श्री-वेदव्यासजी महाराज ।

८ परम हंसाग्रण्य जीवन मुक्त श्री शुकाचार्य जी महाराज ।

९ अनेक ग्रन्थप्रणेताब्रह्माऽवतार वृत्तिकार भगवान् श्रीपुरुषोत्तमा-चार्य जी "बोधायन"

१० स्वामी श्री गंगाधराचार्य जी महाराज ।

११ " " सदाचार्यजी " "

१२ " " रामेश्वराचार्यजी" "

१३ " " द्वारानन्दाचार्य " "

१४ " " देवानन्दाचार्य " " (ब्रह्मसूत्र पर प्रमिताक्षरा-व्याख्याकार)

१५ " " श्यामानन्दाचार्य" "

१६ " " श्रुतानन्दाचार्य " "

१७ " " चिदानन्दाचार्य " "

१८ " " पूर्णानन्दाचार्य " "

१९ " " श्रियानन्दाचार्य " "
२० " " हर्य्यानन्दाचार्य " "
२१ परमगुरु स्वामी श्री राघवानन्दाचार्य जी महाराज।
२२ भगवदवतार जगद्गुरु स्वामी श्री रामानन्दाचार्य जी महाराज (आनन्दभाष्यादिकार)
२३ जगद्गुरु स्वामी श्री अनन्तानन्दाचार्य जी महाराज—(श्री हरिभक्ति सिन्धु वेलाकार)
२४ मृत्यु विजयी पयोहारी श्री कृष्णदास जी महाराज।
२५ स्वामी श्री अग्रदेवाचार्य जी महाराज (अनेक ग्रन्थकार)
२६ " " भगवानदास जी महाराज।
२७ " " लक्ष्मणदास " "
२८ " " मस्तराम " "
२९ " " लक्ष्मी दास " "
३० " " नन्दलालदास " "
३१ " " हरिदास " "
३२ विद्वाचार्य जगद्गुरु स्वामी श्री रामप्रसादाचार्य जी महाराज (श्री जानकी भाष्यादिकार)
३३ श्री स्वामी रघुनाथप्रसादाचार्य जी महाराज (श्री महाराज चरित्रकार)
३४ पंडित प्रवर स्वामी श्री हनुमानदास जी महाराज।
३५ भाष्यकार स्वामी श्री हरिदासाचार्य जी महाराज (अनेक ग्रन्थकार)
३६ स्वामी श्री मैथली प्रपन्न जी।

आचार्य-परिचर्या

[संशोधित सुन्दर सचित्र संस्करण]

[जयन्ती के अवसर पर पाठ करने लायक सुन्दर कविता-पुस्तक]

माघ बदी सप्तमी को प्रतिवर्ष भारत के सभी प्रान्तों में श्रीराम-भक्त हिन्दू धर्मोद्धारक आचार्य महाप्रभु श्रीरामानन्द स्वामीजी महाराज की जन्म जयन्ती का महोत्सव आनन्दपूर्वक मनाते हैं, उस अवसर पर आचार्य की स्तुति करने के लिये यतीन्द्र विंशति, यतिराज, स्तवराज, श्रीरामानन्दाष्टक आदि स्तोत्रों का पाठ बड़े प्रेम से किया जाता है, भावुक भक्त भाषा काव्य में अपनी कवितायें कह सुनकर कृतार्थ होते हैं। "आचार्य-परिचर्या" ऐसी ही हृदयहारिणी सुन्दर कमनीय कविताओं का श्रेष्ठ संकलन है। परिमार्जित शुद्ध खड़ी बोली में आचार्य-चरणों की महिमा प्रदर्शक, भाव गंभीर, मनोहर रचनायें पढ़कर आप भी मुग्ध हो जायँगे और बार-बार परायण करने पर भी पुस्तक छोड़ने का मन न होगा। रचयिता हैं श्रीराम-भक्तिरसपूर्ण साहित्य-सुधा बरसाने वाले आपके चिरपरिचित श्रीअवध किशोरदासजी महाराज श्रीवैष्णव 'प्रेमनिधि'। कागज की महँगी से कम प्रतियाँ छपी हैं, आप आर्डर देकर आज ही अपनी पुस्तक मँगा लीजिये। मूल्य ॥) आठ आना।

पता—श्रीरामानन्द ग्रन्थमाला, "जागृति" कार्यालय,
विमल बसेरा, २५० कटरा, प्रयाग।